याद नहीं बिसरी

(कविता संग्रह)

निर्मल चन्द 'निर्मल'

याद नहीं बिसरी

(कविता संग्रह)

प्रभु पर आश्रित ना जिनका गर्व हो
द्रव्य की चौखट ना जिनका सर्व हो
सरस्वती आराधना उनके लिये है
पँगका मस्ती भी जिन्हें एक पर्व हो।

निर्मल चन्द 'निर्मल'

याद नहीं बिसरी
(कविता संग्रह)

प्रकाशक

नवल प्रकाशन,

117 , मोहन नगर वार्ड , सागर (म.प्र.) पिन - 470002

दूरभाष : (07582) 249251

प्रथम संस्करण :

वर्ष - 2005

सर्वाधिकार :

नवल प्रकाशन, सागर (म.प्र.)

मूल्य : 60 रू मात्र

मुद्रक : इला प्रिंटर्स ,

117 , मोहन नगर वार्ड , सागर (म.प्र.) पिन - 470002

दूरभाष : (07582) 249251

यह काव्य कृति .....

★ यह काव्य संग्रह तीन भागों में विभक्त है , यथा खण्ड अ,व, और स। तीनों खण्ड की रचनाओं के गुम्फन में विविधता है – शैली के आधार पर। प्रथम और द्वितीय खण्ड में विभिन्न भाव – भंगिमा के साथ गीतों का सिलसिला है जवकि तृतीय खण्ड में स्वतंत्र विधा की रचनायें हैं – जो सामाजिक विसंगतियों को उजागर करती हैं कुछ में भावप्रधानता है तो कुछ में विचार प्रधानता। स्वतंत्र विधा की दो – चार रचनाओं के साथ संभवत: हमारी सहमति न वने किन्तु हमें सोचने और विचारने को वाध्य करेंगी ही। समय के साथ पैर जमाकर चलने अथवा न चलने को हम स्वतंत्र हैं , किन्तु आते हुये प्रवाह को रोकने में हम सक्षम हो सकेंगे अथवा दूर खडे तमाशवीन वने रहेंगे अथवा उसका साथ देंगे ये तीन विकल्प हमारे सामने खुले हैं।

★ इन रचनाओं में मैंने वर्तमान यथार्थ को ही उजागर करने का प्रयास किया है। सफल कितना हुआ हूँ मूल्यांकन भिज्ञ पाठकों के हाथ में है।

★ मेरे साहित्यिक सफर में वडे भाई शिवकुमार जी श्रीवास्तव, डॉ. कान्तिकुमार जैन और दादा डालचंद जी की शुभकामनायें मेरा सम्वल रही हैं।

★ यह मेरी छठवीं काव्य कृति है। पाठकगण मेरी कलम से परिचित हैं अत: मेरा मौन ही सार्थक है।

दिनांक : 27/2/2005

निर्मल चन्द ' निर्मल '
पुर्वियाऊ टौरी सागर (म.प्र.)

अनुक्रम

खण्ड – अ

1.	गीत लिखना साधना है	11
2.	हर जगह जश्ने–तराना पंख फैलाता नहीं	13
3.	मैं विचारों में अभी पिछड़ा हुआ हूँ	15
4.	उतना ही पाते हैं	17
5.	व्यर्थ के बंधन न बांधो	19
6.	याद नहीं बिसरी	20
7.	चलना भूल न जाना राही	21
8.	मौसम बदलना चाहिए	23
9.	भेद के बंधन न बाँधें	25
10.	गीत गाना चाहता हूँ	26
11.	आजादी से डर लगता है	28
12.	गीत सुमन दल के	30
13.	जिन्दगी नवगीत है	31
14.	पूरा देश गुलाम हो गया	33
15.	जीवन का क्या अभिप्राय	34
16.	आप आखिर आदमी हैं	35
17.	गीतों का सफर	37
18.	लय बनाता है कवि	43
19.	आज कैसे हो गये हैं लोग	45
20.	बासंती दोहे	47
21.	श्रम वीर दोहे	48
22.	वर्ष के दोहे	49
23.	समय के दोहे	50
24.	भोर होने में अभी देरी लगेगी	51

खण्ड – ब

25.	बाहुबल ही आपकी पहचान है	
26.	बढ चलो दोस्त अगली सदी के लिये	55
27.	झुकना जिसे आया है शजर वो फला भी है	56
28.	संसार तो मिले	57
29.	भारत के लोग कर दिये सस्ते जमीन पर	58
30.	ढूँढना उजाला है	59
31.	हम एतवार करते हैं	60
32.	कौमी तराना आ गया	61
33.	राजीव रत्न गांधी	62
34.	नाम का परचम तो हो	63
35.	मौसम सुहाने हो गये	64
36.	अब कहां गाँव कहाँ देहाती	65
37.	होता आसां नहीं मछली सा मोहब्बत करना	66
38.	ऐसा क्यों है ?	67
39.	जब बोलना आता है दोस्त	68
40.	एक जलजला है दोस्त	69
41.	दे जाएगी हुनर तुमको	70
42.	हम	71
43.	क्षुद्र दाने भी यहां आसमान पाते हैं	72
44.	सोये चादर तान मिले	73
45.	समय के फेर ने पटका कहाँ जमाने को	74
46.	सोचिये फिक्र कब किसको रही जमाने की	76
47.	जन्म–दिन–तुम्हारा	77
48.	जन्म–दिन–हमारा	78
49.	पिता जी	79
50.	अग्रज की स्मृति में	80

खण्ड –स

51.	केरियर	85
52.	पहचानिये	86
53.	तृप्ति लाभ	87
54.	संसद गवाह	88
55.	डरता हूँ इनकी मृत्यु से	89
56.	हम अपनी पीठ ठोक सकते हैं	90
57.	दूसरी दुनियाँ	91
58.	कैंचुली	92
59.	एक बोझ कब तक	93
60.	जीने का हक दें	94
61.	मजारों पर	95
62.	एम.आर.	96
63.	स्वच्छन्द होने के लिये	97
64.	लड़की भाग गई	99
65.	मुखौटा	100
66.	तलाश जारी है	102
67.	निर्णय करना है हमें	103

❖

गीत लिखना साधना है

तुम भले कुछ भी कहो, पर गीत लिखना साधना है।

भाव की कोमल पंखुड़ियाँ, ध्यान सरिता में नहाती
शब्द शक्ति के चयन में, घुंघरूओं की सदा आती
प्रीत के पावन झरोखे, माननी का मान भी है
छन्द-रस की आरती में, प्रिय का गुणगान भी है,
लक्ष्य का सन्धान इसमें, इष्ट की आराधना है
तुम भले कुछ भी कहो, पर गीत लिखना साधना है।

सरस, मृदु सरगम पिरोना, मानसिक उल्लास साथी
एक शीतल पवन मग में, प्यार के चादर बिछाती
नयन की भाषा कलम के, आसरे निभती चली है
धड़कनों के स्वर पकड़कर, आस्था जैसे फली है
ज्वार हृदय का यहाँ, संयत कलम से बाँधना है
तुम भले कुछ भी कहो, पर गीत लिखना साधना है।

क्रोध, कटुता, घृणा का होता नहीं आबास इसमें
नेह से भींगा सुसज्जित मदभरा परिहास इसमें
प्रेम के बंधन लपेटे रूठने के क्षण मिलेंगे
विरह की गहराई में भी प्रीत के अंकुर खिलेंगे
लाज, करूणा, बाँकपन की गंध भी अनुमानना है
तुम भले कुछ भी कहो, पर गीत लिखना साधना है।

सामान्य परिचय

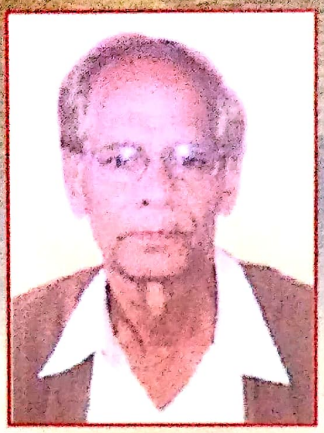

निर्मल चन्द 'निर्मल'

नाम – निर्मल चन्द 'निर्मल'

जन्म – 6 मार्च 1931, चकराघाट, सागर (म.प्र.)

पूर्व प्रकाशित काव्य कृतियाँ

1. उठाओ कुदाली
2. और कुछ नहीं हुआ
3. गीत वही लिख पाता है
4. गीत है ये जिन्दगी
5. कुछ ऐसे लोग हुआ करते

विशेष – अनेक साहित्यिक सम्मानों से विभूषित

स्थाई पता - पुर्बियाऊ टौरी, सागर (म.प्र.)

☎: 222756, 509058, 9302910785

इला प्रिंटर्स, सागर 249251